PHILOSOPHY (Hons)
Paper- VIII
11/08/2020

Ajeet Kumar
Assistant Professor
C.M.J College
Donwarihat.

Religion without God.

हमेशा से अक्सर यह प्रश्न उठाया गया है कि ईश्वर के बिना धर्म संभव है या नहीं धर्म की परिभाषा ईश्वर से जोड़ कर भी की जाती है इन परिभाषा के अनुसार ईश्वर में विश्वास धर्म का अनिवार्य तत्व है धर्म को ईश्वर से जोड़ने वाली परिभाषा यहूदी ईसाई और इस्लाम जैसी पैगम्बरी धर्मों के सन्दर्भ में सन्तोषजनक लग सकती है लेकिन जब हम जैन और बौद्ध धर्मों जैसे भारतीय मूल के धर्मों की ओर ध्यान देते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ये परिभाषा अपर्याप्त है। धर्म की ऐसी कोई भी परिभाषा संतोषजनक नहीं मानी जा सकती है जिसके परिणामस्वरूप जैन बौद्ध धर्मों को और यहाँ तक कि हिन्दू धर्म के निरीश्वरवादी होने के बारे में कोई

संदेह नहीं है। जैन विचारकों द्वारा ईश्वर के समर्थन में दी जाने वाली युक्तियों का खण्डन किया गया है। जैन दर्शन के स्याद्वाद मंजरी में निरीश्वरवाद के समर्थन में विस्तार से युक्तियां दी गयी हैं। आठवीं शताब्दी में षड्दर्शनसमुच्चय पर अपने भाष्य तर्करहस्यदीपिका में गुणरत्न ने निरीश्वरवाद का समर्थन किया।

जैन धर्म में विश्व को अनादि माना गया है। ईश्वर को विश्व के रचयिता के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है। इसी जैन धर्म में मोक्ष पाने के लिए ईश्वर की सहायता या कृपा कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती है ईश्वर की भक्ती और उपासना के बिना साधक स्वयं अपने प्रयत्नों से जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है बौद्ध धर्म भी का त्यागकर उसका पंथवादी रूप निरीश्वरवादी है।